1

मेरा साई तो मों में...

मेरा साई तो मों में, नाहीं न्यारा, जाने सो जाननहारा ।
पहले खेद सह्यो बिन जानें, अब सुख अपरंपारा ।।
अनन्त चतुष्टय धारक ज्ञायक, गुण परजै द्रव सारा ।
जैसा राजत गंध कुटी में, तैसा मुझ में म्हारा ।।

मेरा साई तो मों में, नाहीं न्यारा.....

हित अनहित मम पर विकलप तैं, कर्म बंध भये भारा ।
ताहि उदय गति गति सुख दुख में, भाव किये दुखकारा ।।

मेरा साई तो मों में, नाहीं न्यारा.....

काललब्धि जिन आगम सेती, संशय भरम विदारा ।
'बुधजन' जान करावन कर्ता, हों हि एक हमारा ।।
मेरा साई तो मों में, नाहीं न्यारा, जाने सो जाननहारा...

मेरा साई अर्थात मेरा प्रभु तो मुझ में ही है अर्थात् मेरा ही स्वरूप होने के कारण मुझसे भिन्न नही है, और जो इस तत्त्व को जान लेता है वह भी न्यारा तत्त्व प्रभु बन जाता है।जब तक मुझे अपने ही भीतर रहने वाले प्रभु (आत्मा) का ज्ञान नही था तब तक मैंने घोर दुःख सहे परन्तु अब जब मुझे इसका ज्ञान हो गया है तब इस ज्ञान सुख का पार ही नही है।।टेक।।

अनन्त चतुष्टय के धारी, जिनके ज्ञान में समस्त द्रव्य-गुण-पर्याय एक साथ झलकते हैं, गंधकुटी में विराजमान अरहंत भगवान जैसा मुझ में ही मेरा स्वरूप है, उससे किंचित भी भिन्न नही है।।१।।

मैं निरंतर परसंयोगों के प्रति हित-अहित, इष्ट-अनिष्ट के विकल्प जाल में उलझा रहा, जिसके कारण अनादि से कर्मबंध करता आया हूँ और जब-जब उन कर्मो का उदय आता है तब-तब गतियों में संक्लेश परिणामों द्वारा अनन्त दुःख को भोगता आया हूँ।।२।।

परन्तु अब निश्चित ही शुभ काललब्धि के कारण जिनागम का सेवन हुआ है जिससे समस्त संशय एवं भ्रमरूप अज्ञान का नाश हो गया है। कविवर बुधजनजी कहते हैं कि जिनवाणी के अभ्यास से यह निश्चय हुआ है कि इस अलौकिक ज्ञान का कर्ता यह जीव स्वयं ही है और कोई इसका कारण नहीं हो सकता, अतः अब अपना कल्याण करने के उपाय में शीघ्र ही लगना चाहिये।।३।।